قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

رُبَمَا

पारा - 14

eParah

رُبَمَا	يَوَدُّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْ	كَانُوْا	مُسْلِمِيْنَ (2)	ذَرْهُمْ
कभी	चाहेंगे	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	काश	वो होते	मुसलमान	छोड़ दीजिए उन्हें

يَاْكُلُوْا	وَيَتَمَتَّعُوْا	وَيُلْهِهِمُ	الْاَمَلُ	فَسَوْفَ	يَعْلَمُوْنَ (3)	وَمَآ
वो खाएं	और वो मज़े उड़ाएं	और ग़ाफ़िल रखे उन्हें	उम्मीद	पस अनक़रीब	वो जान लेंगे	और नहीं

اَهْلَكْنَا	مِنْ قَرْيَةٍ	اِلَّا	وَلَهَا	كِتَابٌ	مَّعْلُوْمٌ (4)	مَا
हलाक किया हमने	किसी बस्ती को	मगर	जबकि उसके लिए	लिखा हुआ है	मालूम (वक़्त)	नहीं

تَسْبِقُ	مِنْ اُمَّةٍ	اَجَلَهَا	وَمَا	يَسْتَاْخِرُوْنَ (5)	وَقَالُوْا	يٰٓاَيُّهَا
सबक़त करती/आगे बढ़ती	कोई उम्मत	अपने मुक़र्रर वक़्त से	और ना	वो पीछे रह सकती है	और उन्होंने कहा	ऐ

الَّذِيْ	نُزِّلَ	عَلَيْهِ	الذِّكْرُ	اِنَّكَ	لَمَجْنُوْنٌ (6) ط	لَوْ مَا	تَاْتِيْنَا
वो शख़्स	उतारा गया	जिस पर	ज़िक्र (क़ुरआन)	यक़ीनन तू	अलबत्ता मजनून है	क्यों नहीं	तू लाया हमारे पास

بِالْمَلٰٓئِكَةِ	اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (7)	مَا	نُنَزِّلُ	الْمَلٰٓئِكَةَ
फ़रिश्तों को	अगर	है तू	सच्चों में से	नहीं	हम उतारा करते	फ़रिश्तों को

اِلَّا	بِالْحَقِّ	وَمَا	كَانُوْٓا	اِذًا	مُّنْظَرِيْنَ (8)	اِنَّا	نَحْنُ
मगर	साथ हक़ के	और नहीं	होते वो	तब	मोहलत दिए गए	बेशक हम	हम ही ने

نَزَّلْنَا	الذِّكْرَ	وَاِنَّا	لَهٗ	لَحٰفِظُوْنَ (9)	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا
नाज़िल किया हमने	ज़िक्र (क़ुरआन)	और बेशक हम ही	उसकी	अलबत्ता हिफ़ाज़त करने वाले हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजे हमने

مِنْ قَبْلِكَ	فِيْ شِيَعِ	الْاَوَّلِيْنَ (10)	وَمَا	يَاْتِيْهِمْ	مِّنْ رَّسُوْلٍ
आपसे पहले (रसूल)	गिरोहों में	पहले लोगों के	और नहीं	आया उनके पास	कोई रसूल

اِلَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ (11)	كَذٰلِكَ	نَسْلُكُهٗ	فِيْ قُلُوْبِ
मगर	थे वो	उसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	इसी तरह	हम दाख़िल करते हैं उसको	दिलों में

الْمُجْرِمِيْنَ ۙ (12)	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِهٖ	وَقَدْ	خَلَتْ	سُنَّةُ	الْاَوَّلِيْنَ (13)
मुजरिमों के	नहीं वो ईमान लाएंगे	इस पर	और तहक़ीक़	गुज़र चुका	तरीक़ा	पहलों का

وَلَوْ	فَتَحْنَا	عَلَيْهِمْ	بَابًا	مِّنَ السَّمَآءِ	فَظَلُّوْا	فِيْهِ
और अगर	खोल दें हम	उन पर	कोई दरवाज़ा	आसमान से	तो शुरू हो जाऐं	उसमें

يَعْرُجُوْنَ ۙ (14)	لَقَالُوْٓا	اِنَّمَا	سُكِّرَتْ	اَبْصَارُنَا	بَلْ	نَحْنُ
वो चढ़ते	अलबत्ता वो कहेंगे	बेशक	मदहोश कर दी गई हैं	निगाहें हमारी	बल्कि	हम तो

ع 1 15 1

قَوْمٌ	مَّسْحُوْرُوْنَ ع (15)	وَلَقَدْ	جَعَلْنَا	فِى السَّمَآءِ	بُرُوْجًا
लोग हैं	सहरज़दा	और अलबत्ता तहक़ीक़	बनाए हमने	आसमान में	कई बुर्ज

وَّزَيَّنّٰهَا	لِلنّٰظِرِيْنَ ۙ (16)	وَحَفِظْنٰهَا	مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ
और मुज़य्यन किया हमने उसे	देखने वालों के लिए	और हिफ़ाज़त की हमने उसकी	हर शैतान से

رَّجِيْمٍ ۙ (17)	اِلَّا	مَنِ	اسْتَرَقَ	السَّمْعَ	فَاَتْبَعَهٗ	شِهَابٌ
जो मरदूद है	मगर	जिसने	चुरा लिया	सुनी हुई बात को	तो पीछा करता है उसका	एक शोला

مُّبِيْنٌ (18)	وَالْاَرْضَ	مَدَدْنٰهَا	وَاَلْقَيْنَا	فِيْهَا	رَوَاسِىَ	وَاَنْۢبَتْنَا
चमकता हुआ	और ज़मीन को	फैला दिया हमने उसे	और डाले हमने	उसमें	पहाड़	और उगाई हमने

فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	شَىْءٍ	مَّوْزُوْنٍ (19)	وَجَعَلْنَا	لَكُمْ	فِيْهَا
इसमें	हर तरह की	चीज़	मौज़ूं/मुनासिब	और बनाए हमने	तुम्हारे लिए	इसमें

مَعَايِشَ	وَمَنْ	لَّسْتُمْ	لَهٗ	بِرٰزِقِيْنَ (20)	وَاِنْ	مِّنْ شَىْءٍ
असबाबे मईशत	और उसके लिए (भी)	नहीं हो तुम	जिसके	राज़िक़	और नहीं	कोई चीज़

اِلَّا	عِنْدَنَا	خَزَآئِنُهٗ	وَمَا	نُنَزِّلُهٗٓ	اِلَّا	بِقَدَرٍ
मगर	हमारे पास	ख़ज़ाने हैं उसके	और नहीं	हम उतारते उसे	मगर	साथ अंदाज़े

مَّعْلُومٍ (21)	وَأَرْسَلْنَا	الرِّيٰحَ	لَوَاقِحَ	فَأَنزَلْنَا	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً
मालूम के	और भेजा हमने	हवाओं को	बार आवर	फिर नाज़िल किया हमने	आसमान से	पानी

فَأَسْقَيْنٰكُمُوهُ ج	وَمَآ	أَنتُمْ	لَهُ	بِخٰزِنِينَ (22)	وَإِنَّا	لَنَحْنُ
पस पिलाया हमने तुम्हें वो	और नहीं	हो तुम	उसे	ज़ख़ीरा करने वाले	और बेशक हम	यक़ीनन हम ही

نُحْيِۦ	وَنُمِيتُ	وَنَحْنُ	الْوٰرِثُونَ (23)	وَلَقَدْ	عَلِمْنَا
हम ज़िंदा करते हैं	और हम मौत देते हैं	और हम ही	वारिस हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया हमने

الْمُسْتَقْدِمِينَ	مِنكُمْ	وَلَقَدْ	عَلِمْنَا	الْمُسْتَأْخِرِينَ (24)	وَإِنَّ
आगे बढ़ने वालों को	तुम में से	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया हमने	पीछे रहने वालों को	और बेशक

ع 2 10 2

رَبَّكَ	هُوَ	يَحْشُرُهُمْ ط	إِنَّهُ	حَكِيمٌ	عَلِيمٌ (25) ع	وَلَقَدْ
रब आपका	वो	वो इकट्ठा करेगा उन्हें	बेशक वो ही है	बहुत हिक्मत वाला	ख़ूब इल्म वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़

خَلَقْنَا	الْإِنسٰنَ	مِن صَلْصٰلٍ	مِّنْ حَمَإٍ	مَّسْنُونٍ (26) ج	وَالْجَآنَّ
पैदा किया हमने	इंसान को	खनकती मिट्टी से	कीचड़ से	बदबूदार	और जिन्न को

خَلَقْنٰهُ	مِن قَبْلُ	مِن نَّارِ السَّمُومِ (27)	وَإِذْ	قَالَ	رَبُّكَ
पैदा किया हमने उसे	इससे क़ब्ल	आग की लपट से	और जब	फ़रमाया	आपके रब ने

لِلْمَلٰٓئِكَةِ	إِنِّى	خٰلِقٌۢ	بَشَرًا	مِّن صَلْصٰلٍ	مِّنْ حَمَإٍ
फ़रिश्तों से	बेशक मैं	पैदा करने वाला हूं	एक इंसान	खनकती मिट्टी से	कीचड़ से

مَّسْنُونٍ (28)	فَإِذَا	سَوَّيْتُهُ	وَنَفَخْتُ	فِيهِ	مِن رُّوحِى	فَقَعُوا
बदबूदार	फिर जब	दुरुस्त कर दूं मैं उसे	और फूंक दूं मैं	उसमें	अपनी रूह से	तो गिर पड़ना

لَهُ	سٰجِدِينَ (29)	فَسَجَدَ	الْمَلٰٓئِكَةُ	كُلُّهُمْ	أَجْمَعُونَ (30) لا
उसके लिए	सज्दा करते हुए	तो सज्दा किया	फ़रिश्तों ने	सबके सब ने	इकट्ठे

قَالَ	السّٰجِدِيْنَ ﴿31﴾	مَعَ	يَّكُوْنَ	اَنْ	اَبٰى	اِبْلِيْسَ ؕ	اِلَّآ
फ़रमाया	सज्दा करने वालों के	साथ	हो वो	कि	उसने इंकार किया	इब्लीस के	सिवाए

قَالَ	مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿32﴾	تَكُوْنَ	اَلَّا	لَكَ	مَا	يٰۤاِبْلِيْسُ
उसने कहा	साथ सज्दा करने वालों के	हुआ तू	कि नहीं	तुझे	क्या है	ऐ इब्लीस

مِّنْ حَمَاٍ	مِنْ صَلْصَالٍ	خَلَقْتَهٗ	لِبَشَرٍ	لِّاَسْجُدَ	اَكُنْ	لَمْ
कीचड़ से	खनकती मिट्टी से	बनाया तूने उसे	ऐसे इंसान को	कि मैं सज्दा करूं	हूं मैं	नहीं

وَّاِنَّ	رَجِيْمٌ ﴿34﴾ ۙ	فَاِنَّكَ	مِنْهَا	فَاخْرُجْ	قَالَ	مَّسْنُوْنٍ ﴿33﴾
और बेशक	मरदूद है	पस बेशक तू	इससे	पस निकल जा	फ़रमाया	बदबूदार

فَاَنْظِرْنِيْۤ	رَبِّ	قَالَ	اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿35﴾	اللَّعْنَةَ	عَلَيْكَ
पस मोहलत दे मुझे	ऐ मेरे रब	वो बोला	बदले के दिन तक	लानत है	तुझ पर

اِلٰى يَوْمِ	مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿37﴾ ۙ	فَاِنَّكَ	قَالَ	يُبْعَثُوْنَ ﴿36﴾	اِلٰى يَوْمِ
उस दिन तक	मोहलत दिए जाने वालों में से है	पस बेशक तू	फ़रमाया	(कि) वो सब उठाए जाएंगे	उस दिन तक

اَغْوَيْتَنِيْ	بِمَاۤ	رَبِّ	قَالَ	الْمَعْلُوْمِ ﴿38﴾	الْوَقْتِ
बेराह किया तूने मुझे	बवजह उसके जो	ऐ मेरे रब	उसने कहा	मालूम/मुक़र्रर है	(जिस का) वक़्त

اِلَّا	اَجْمَعِيْنَ ﴿39﴾ ۙ	وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ	فِي الْاَرْضِ	لَهُمْ	لَاُزَيِّنَنَّ
सिवाए	सबके सबको	अलबत्ता मैं ज़रूर बहकाऊंगा उनको	ज़मीन में	उनके लिए	अलबत्ता मैं ज़रूर मुज़य्यन कर दूंगा

عَلَيَّ	صِرَاطٌ	هٰذَا	قَالَ	الْمُخْلَصِيْنَ ﴿40﴾	مِنْهُمُ	عِبَادَكَ
मुझ तक	रास्ता है	ये	फ़रमाया	जो चुने हुए हैं	उनमें से	तेरे बंदों के

سُلْطٰنٌ	عَلَيْهِمْ	لَكَ	لَيْسَ	عِبَادِيْ	اِنَّ	مُّسْتَقِيْمٌ ﴿41﴾
कोई ज़ोर	उन पर	तेरे लिए	नहीं	मेरे बंदे	बेशक	सीधा

اِلَّا	مَنِ	اتَّبَعَكَ	مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿42﴾	وَ اِنَّ	جَهَنَّمَ
मगर	जो	पैरवी करे तेरी	बहके हुओं में से	और बेशक	जहन्नम

لَمَوْعِدُهُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿43﴾ قلے	لَهَا	سَبْعَةُ	اَبْوَابٍ ط	لِكُلِّ
अलबत्ता उनके वादे की जगह है	सबके सबकी	उसके	सात	दरवाज़े हैं	वास्ते हर

ع 3 19 3

بَابٍ	مِّنْهُمْ	جُزْءٌ	مَّقْسُوْمٌ ﴿44﴾ ع	اِنَّ	الْمُتَّقِيْنَ	فِيْ جَنّٰتٍ
दरवाज़े के	उनमें से	एक हिस्सा है	तक़्सीम शुदा	बेशक	मुत्तक़ी लोग	बाग़ों में होंगे

وَّعُيُوْنٍ ﴿45﴾ ط	اُدْخُلُوْهَا	بِسَلٰمٍ	اٰمِنِيْنَ ﴿46﴾	وَ نَزَعْنَا	مَا
और चश्मों में	दाख़िल हो जाओ इनमें	साथ सलामती के	अमन से रहने वाले	और निकाल देंगे हम	जो भी

فِيْ صُدُوْرِهِمْ	مِّنْ غِلٍّ	اِخْوَانًا	عَلٰى سُرُرٍ	مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿47﴾
उनके सीनों में है	कोई कीना	भाई-भाई बनकर	तख़्तों पर	आमने-सामने (होंगे)

لَا يَمَسُّهُمْ	فِيْهَا	نَصَبٌ	وَّمَا	هُمْ	مِّنْهَا	بِمُخْرَجِيْنَ ﴿48﴾
ना छुएगी उन्हें	उनमें	कोई थकावट	और ना	वो	उनसे	निकाले जाएँगे

نَبِّئْ	عِبَادِيْٓ	اَنِّيْٓ	اَنَا	الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ﴿49﴾ لا	وَ اَنَّ
ख़बर दे दीजिए	मेरे बंदों को	बेशक मैं	मैं ही हूं	बहुत बख़्शने वाला	बहुत रहम करने वाला	और बेशक

عَذَابِيْ	هُوَ	الْعَذَابُ	الْاَلِيْمُ ﴿50﴾	وَ نَبِّئْهُمْ	عَنْ ضَيْفِ
अज़ाब मेरा	वो ही	अज़ाब है	दर्दनाक	और ख़बर दे दीजिए उन्हें	मेहमानों की

وقف لازم

اِبْرٰهِيْمَ ﴿51﴾	اِذْ	دَخَلُوْا	عَلَيْهِ	فَقَالُوْا	سَلٰمًا ط	قَالَ
इब्राहीम के	जब	वो दाख़िल हुए	उस पर	तो उन्होंने कहा	सलाम (हो तुम पर)	उसने कहा

اِنَّا	مِنْكُمْ	وَجِلُوْنَ ﴿52﴾	قَالُوْا	لَا تَوْجَلْ	اِنَّا	نُبَشِّرُكَ
बेशक हम	तुम से	ख़ौफ़ज़दा हैं	उन्होंने कहा	ना तुम डरो	बेशक हम	हम ख़ुशख़बरी देते हैं तुझे

بِغُلٰمٍ	عَلِيْمٍ ﴿53﴾	قَالَ	اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ	عَلٰٓى	اَنْ	مَّسَّنِيَ
एक लड़के की	बहुत इल्म वाले	उसने कहा	क्या ख़ुशख़बरी देते हो तुम मुझे	बावजूद इसके	कि	पहुंच चुका मुझे

الْكِبَرُ	فَبِمَ	تُبَشِّرُوْنَ ﴿54﴾	قَالُوْا	بَشَّرْنٰكَ	بِالْحَقِّ	فَلَا
बुढ़ापा	पस किस चीज़ की	तुम ख़ुशख़बरी देते हो	उन्होंने कहा	ख़ुशख़बरी दी है हमने तुझे	हक़ की	पस ना

تَكُنْ	مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿55﴾	قَالَ	وَمَنْ	يَّقْنَطُ	مِنْ رَّحْمَةِ
तुम हो	मायूस होने वालों में से	उसने कहा	और कौन	मायूस हो सकता है	रहमत से

رَبِّهٖٓ	اِلَّا	الضَّآلُّوْنَ ﴿56﴾	قَالَ	فَمَا	خَطْبُكُمْ	اَيُّهَا
अपने रब की	सिवाए	गुमराह लोगों के	उसने कहा	तो क्या	मामला है तुम्हारा	ऐ

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿57﴾	قَالُوْٓا	اِنَّآ	اُرْسِلْنَآ	اِلٰى قَوْمٍ	مُّجْرِمِيْنَ ﴿58﴾ لا
भेजे हुओ (फ़रिश्तो)	उन्होंने कहा	बेशक हम	भेजे गए हम	तरफ़ उन लोगों के	जो मुजरिम हैं

اِلَّآ	اٰلَ لُوْطٍ ؕ	اِنَّا	لَمُنَجُّوْهُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿59﴾ لا	اِلَّا	امْرَاَتَهٗ
सिवाए	आले लूत के	बेशक हम	अलबत्ता निजात देने वाले हैं उनको	सबके सबको	सिवाए	उसकी बीवी के

قَدَّرْنَآ لا	اِنَّهَا	لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿60﴾ ع	فَلَمَّا	جَآءَ	اٰلَ لُوْطِ
मुक़द्दर कर दिया हमने	बेशक वो	अलबत्ता पीछे रहने वालों में से है	तो जब	आ गए	आले लूत (के पास)

ع 4 16 4

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿61﴾ لا	قَالَ	اِنَّكُمْ	قَوْمٌ	مُّنْكَرُوْنَ ﴿62﴾	قَالُوْا	بَلْ
भेजे हुए (फ़रिश्ते)	उसने कहा	बेशक तुम	एक क़ौम हो	अजनबी	उन्होंने कहा	बल्कि

جِئْنٰكَ	بِمَا	كَانُوْا	فِيْهِ	يَمْتَرُوْنَ ﴿63﴾	وَاَتَيْنٰكَ
लाए हैं हम तेरे पास	वो जो	थे वो	जिसमें	वो शक करते	और लाए हैं हम तेरे पास

بِالْحَقِّ	وَاِنَّا	لَصٰدِقُوْنَ ﴿64﴾	فَاَسْرِ	بِاَهْلِكَ	بِقِطْعٍ
हक़ को	और बेशक हम	अलबत्ता सच्चे हैं	पस ले चलो	अपने घर वालों को	एक हिस्से में

مِّنَ الَّيْلِ	وَاتَّبِعْ	اَدْبَارَهُمْ	وَلَا	يَلْتَفِتْ	مِنْكُمْ	اَحَدٌ
रात के	और चलते चलो	पीछे उनके	और ना	पीछे मुड़कर देखे	तुममें से	कोई एक भी

وَّامْضُوْا	حَيْثُ	تُؤْمَرُوْنَ ﴿65﴾	وَقَضَيْنَآ	اِلَيْهِ	ذٰلِكَ	الْاَمْرَ
और चलते जाओ	जहां का	तुम हुक्म दिए जाते हो	और फ़ैसला पहुंचा दिया हमने	तरफ़ उसके	उस	मामले का

اَنَّ	دَابِرَ	هٰٓؤُلَآءِ	مَقْطُوْعٌ	مُّصْبِحِيْنَ ﴿66﴾	وَجَآءَ
बेशक	जड़	उन लोगों की	काट दी जाएगी	जबकि वो सुबह करने वाले होंगे	और आ गए

اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ	يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿67﴾	قَالَ	اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ	ضَيْفِيْ
शहर वाले	ख़ुशियां मनाते हुए	(लूत ने) कहा	बेशक	ये लोग	मेहमान हैं मेरे

فَلَا	تَفْضَحُوْنِ ﴿68﴾	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَلَا	تُخْزُوْنِ ﴿69﴾	قَالُوْٓا
पस ना	तुम रुस्वा करो मुझे	और डरो	अल्लाह से	और ना	तुम ज़लील करो मुझे	उन्होंने कहा

اَوَلَمْ	نَنْهَكَ	عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿70﴾	قَالَ	هٰٓؤُلَآءِ	بَنٰتِيْٓ	اِنْ
क्या भला नहीं	हमने रोका था तुझे	तमाम जहान वालों से	उसने कहा	ये	बेटियां हैं मेरी	अगर

كُنْتُمْ	فٰعِلِيْنَ ﴿71﴾	لَعَمْرُكَ	اِنَّهُمْ	لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ ﴿72﴾
हो तुम	करने वाले	आपकी ज़िंदगी की क़सम	बेशक वो	अलबत्ता अपने नशे में	वो बहक रहे थे

فَاَخَذَتْهُمُ	الصَّيْحَةُ	مُشْرِقِيْنَ ﴿73﴾	فَجَعَلْنَا	عَالِيَهَا	سَافِلَهَا
तो पकड़ लिया उन्हें	एक चिंघाड़ ने	सूरज तुलू होते वक़्त	तो कर दिया हमने	ऊपर वाला उसका	निचला उसका

وَاَمْطَرْنَا	عَلَيْهِمْ	حِجَارَةً	مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿74﴾	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
और बरसाए हमने	उन पर	पत्थर	पकी हुई मिट्टी के	बेशक	इसमें

لَاٰيٰتٍ	لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿75﴾	وَاِنَّهَا	لَبِسَبِيْلٍ	مُّقِيْمٍ ﴿76﴾	اِنَّ
अलबत्ता निशानियां हैं	गहरी नज़र से देखने वालों के लिए	और बेशक वो	अलबत्ता ऐसे रास्ते पर है	जो क़ायम है	बेशक

فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿77﴾ ط	وَاِنْ	كَانَ	اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ
इसमें	अलबत्ता एक निशानी है	ईमान वालों के लिए	और बेशक	थे	ऐका/जंगल वाले
لَظٰلِمِيْنَ ﴿78﴾ لا	فَانْتَقَمْنَا	مِنْهُمْ ۠	وَاِنَّهُمَا	لَبِاِمَامٍ	مُّبِيْنٍ ﴿79﴾ ط ع
अलबत्ता ज़ालिम	तो इंतिक़ाम लिया हमने	उनसे	और बेशक वो दोनों हैं	अलबत्ता रास्ते पर	वाज़ेह
وَلَقَدْ	كَذَّبَ	اَصْحٰبُ الْحِجْرِ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿80﴾ لا	وَاٰتَيْنٰهُمْ	
और अलबत्ता तहक़ीक़	झुठलाया	हिज्र वालों ने	रसूलों को	और दीं हमने उन्हें	
اٰيٰتِنَا	فَكَانُوْا	عَنْهَا	مُعْرِضِيْنَ ﴿81﴾ لا	وَكَانُوْا	يَنْحِتُوْنَ
अपनी निशानियां	तो थे वो	उनसे	ऐराज़ करने वाले	और थे वो	वो तराशते
مِنَ الْجِبَالِ	بُيُوْتًا	اٰمِنِيْنَ ﴿82﴾	فَاَخَذَتْهُمُ	الصَّيْحَةُ	
पहाड़ों से	घरों को	अमन से रहने वाले	तो पकड़ लिया उन्हें	चिंघाड़ ने	
مُصْبِحِيْنَ ﴿83﴾ لا	فَمَآ	اَغْنٰى	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿84﴾ ط
जबकि वो सुबह करने वाले थे	तो ना	काम आया	उन्हें	जो कुछ	थे वो	वो कमाई करते
وَمَا	خَلَقْنَا	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَآ	اِلَّا	بِالْحَقِّ ط
और नहीं	पैदा किया हमने	आसमानों	और ज़मीन को	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	मगर	साथ हक़ के
وَاِنَّ	السَّاعَةَ	لَاٰتِيَةٌ	فَاصْفَحِ	الصَّفْحَ	الْجَمِيْلَ ﴿85﴾	
और बेशक	क़यामत	ज़रूर आने वाली है	पस दरगुज़र कीजिए	दरगुज़र करना	ख़ूबसूरती से	
اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	الْخَلّٰقُ	الْعَلِيْمُ ﴿86﴾	وَلَقَدْ	اٰتَيْنٰكَ	
बेशक	रब आपका	वो ही है	ख़ूब पैदा करने वाला	ख़ूब जानने वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़	दीं हमने आपको	
سَبْعًا	مِّنَ الْمَثَانِيْ	وَالْقُرْاٰنَ	الْعَظِيْمَ ﴿87﴾	لَا تَمُدَّنَّ			
सात	दोहराई जाने वाली (आयात)	और क़ुरआने	अज़ीम	हरगिज़ ना आप दराज़ कीजिए			

وقف لازم ع 5 19 5

وَلَا	مِّنْهُمْ	اَزْوَاجًا	بِهٖٓ	مَتَّعْنَا	اِلٰى مَا	عَيْنَيْكَ
और ना	उनमें से	मुख़्तलिफ़ लोगों को	साथ जिसके	फ़ायदा दिया हमने	तरफ़ उसके जो	अपनी दोनों आंखें

اِنِّيْٓ	وَقُلْ	لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿88﴾	جَنَاحَكَ	وَاخْفِضْ	عَلَيْهِمْ	تَحْزَنْ
बेशक मैं	और कह दीजिए	मोमिनों के लिए	बाज़ू अपना	और झुका लीजिए	उन पर	आप ग़म कीजिए

الَّذِيْنَ	عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿90﴾ لا	اَنْزَلْنَا	كَمَآ	الْمُبِيْنُ ﴿89﴾ ج	النَّذِيْرُ	اَنَا
वो जिन्होंने	तक़्सीम करने वालों पर	नाज़िल किया हमने	जैसा कि	खुल्लम-खुल्ला	डराने वाला हूं	मैं तो

لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ	فَوَرَبِّكَ	عِضِيْنَ ﴿91﴾	الْقُرْاٰنَ	جَعَلُوْا
अलबत्ता हम ज़रूर सवाल करेंगे उनसे	पस क़सम है आपके रब की	टुकड़े-टुकड़े	क़ुरआन को	कर दिया

الربع

بِمَا	فَاصْدَعْ	يَعْمَلُوْنَ ﴿93﴾ الربع	كَانُوْا	عَمَّا	اَجْمَعِيْنَ ﴿92﴾ لا
जिसका	पस आप खुल्लम-खुल्ला सुना दीजिए	वो अमल करते	थे वो	उस चीज़ के बारे में जो	सबके-सबसे

كَفَيْنٰكَ	اِنَّا	عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿94﴾	وَاَعْرِضْ	تُؤْمَرُ
काफ़ी हैं हम आपको	बेशक हम	मुशरिकों से	और ऐराज़ कीजिए	आप हुक्म दिए जाते हैं

اٰخَرَ ج	اِلٰهًا	اللّٰهِ	مَعَ	يَجْعَلُوْنَ	الَّذِيْنَ	الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿95﴾ لا
दूसरा	इलाह	अल्लाह के	साथ	बना लेते हैं	वो लोग जो	मज़ाक़ उड़ाने वालों से

يَضِيْقُ	اَنَّكَ	نَعْلَمُ	وَلَقَدْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿96﴾	فَسَوْفَ
तंग होता है	कि बेशक आप	हम जानते हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	वो जान लेंगे	पस अनक़रीब

وَكُنْ	رَبِّكَ	بِحَمْدِ	فَسَبِّحْ	يَقُوْلُوْنَ ﴿97﴾ لا	بِمَا	صَدْرُكَ
और हो जाइए	अपने रब की	साथ हम्द के	पस तस्बीह कीजिए	वो कहते हैं	बवजह उसके जो	सीना आपका

ع 6 20 6

الْيَقِيْنُ ﴿99﴾ ع	يَاْتِيَكَ	حَتّٰى	رَبَّكَ	وَاعْبُدْ	مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿98﴾ لا
यक़ीन (मौत)	आ जाए आपके पास	यहां तक कि	अपने रब की	और इबादत कीजिए	सज्दा करने वालों में से

16 سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ 70

اٰيَاتُهَا: 128 | رُكُوْعَاتُهَا: 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰٓى	اَمْرُ	اللّٰهِ	فَلَا	تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ	سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى	عَمَّا
आ पहुंचा	हुक्म	अल्लाह का	पस ना	तुम जल्दी मांगो उसे	पाक है वो	और बुलंदतर है	उससे जो

يُشْرِكُوْنَ ①	يُنَزِّلُ	الْمَلٰٓئِكَةَ	بِالرُّوْحِ	مِنْ اَمْرِهٖ	عَلٰى مَنْ
वो शरीक ठहराते हैं	वो उतारता है	फ़रिश्तों को	साथ वही के	अपने हुक्म से	जिस पर

يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖٓ	اَنْ	اَنْذِرُوْٓا	اَنَّهٗ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّآ
वो चाहता है	अपने बंदों में से	कि	तुम डराओ (लोगों को)	कि बेशक वो	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

اَنَا	فَاتَّقُوْنِ ②	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	بِالْحَقِّ ؕ	تَعٰلٰى
मैं ही	पस डरो मुझसे	उसने पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	साथ हक़ के	बुलंदतर है

عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ③	خَلَقَ	الْاِنْسَانَ	مِنْ نُّطْفَةٍ	فَاِذَا	هُوَ
उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	उसने पैदा किया	इंसान को	एक नुत्फ़े से	फिर अचानक	वो

خَصِيْمٌ	مُّبِيْنٌ ④	وَالْاَنْعَامَ	خَلَقَهَا ۚ	لَكُمْ	فِيْهَا
झगड़ालू है	खुल्लम-खुल्ला	और चौपाय	उसने पैदा किया उन्हें	तुम्हारे लिए	उनमें

دِفْءٌ	وَّمَنَافِعُ	وَمِنْهَا	تَاْكُلُوْنَ ⑤ ۖ	وَلَكُمْ	فِيْهَا	جَمَالٌ
गर्मी का सामान	और कई फ़ायदे हैं	और उनमें से	तुम खाते हो	और तुम्हारे लिए	उनमें	ख़ूबसूरती है

حِيْنَ	تُرِيْحُوْنَ	وَحِيْنَ	تَسْرَحُوْنَ ⑥ ۖ	وَتَحْمِلُ	اَثْقَالَكُمْ
जिस वक़्त	तुम शाम को चरा कर लाते हो	और जिस वक़्त	तुम सुबह चराने जाते हो	और वो उठा ले जाते हैं	बोझ तुम्हारे

اِلٰى بَلَدٍ	لَّمْ	تَكُوْنُوْا	بٰلِغِيْهِ	اِلَّا	بِشِقِّ	الْاَنْفُسِ ؕ
तरफ उस शहर के	ना	थे तुम	पहुंचने वाले उस तक	मगर	साथ मशक़्क़त के	जानों की

اِنَّ	رَبَّكُمْ	لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ۙ ⑦	وَّالْخَيْلَ	وَالْبِغَالَ
बेशक	रब तुम्हारा	अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और घोड़े	और ख़च्चर

وَالْحَمِيْرَ	لِتَرْكَبُوْهَا	وَزِيْنَةً ؕ	وَيَخْلُقُ	مَا	لَا	تَعْلَمُوْنَ ⑧
और गधे	ताकि तुम सवारी करो उन पर	और ज़ीनत भी हैं	और वो पैदा करेगा	जो	नहीं	तुम जानते

وَعَلَى اللّٰهِ	قَصْدُ	السَّبِيْلِ	وَمِنْهَا	جَآئِرٌ ؕ	وَلَوْ	شَآءَ
और अल्लाह ही पर है	सीधा	रास्ता	और उनमें से कुछ	टेढ़े हैं	और अगर	वो चाहता

ع 1 9 7

لَهَدٰىكُمْ	اَجْمَعِيْنَ ⑨ ع	هُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً
अलबत्ता हिदायत दे देता तुम्हें	सबके सबको	वो ही है	जिसने	उतारा	आसमान से	पानी

لَّكُمْ	مِّنْهُ	شَرَابٌ	وَّمِنْهُ	شَجَرٌ	فِيْهِ	تُسِيْمُوْنَ ⑩
तुम्हारे लिए	उसमें से	पीना है	और उसमें से	दरख़्त है	जिसमें	तुम चराते हो

يُنْۢبِتُ	لَكُمْ	بِهِ	الزَّرْعَ	وَالزَّيْتُوْنَ	وَالنَّخِيْلَ
वो उगाता है	तुम्हारे लिए	साथ उसके	खेती	और ज़ैतून	और खजूर के दरख़्त

وَالْاَعْنَابَ	وَمِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً
और अंगूर	और हर क़िस्म में से	फलों की	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है

لِّقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ ⑪	وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ ۙ
उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रात	और दिन को

وَالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ ؕ	وَالنُّجُوْمُ	مُسَخَّرٰتٌۢ	بِاَمْرِهٖ ؕ	اِنَّ
और सूरज	और चांद को	और सितारे	मुसख़्ख़र किए गए हैं	उसके हुक्म से	बेशक

فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ ۙ ⑫	وَمَا	ذَرَاَ	لَكُمْ
इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	और जो कुछ	उसने फैला दिया	तुम्हारे लिए

فِي الْاَرْضِ	مُخْتَلِفًا	اَلْوَانُهٗ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ
ज़मीन में	मुख़्तलिफ़ हैं	रंग उसके	यक़ीनन	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए

يَّذَّكَّرُوْنَ ⑬	وَهُوَ	الَّذِيْ	سَخَّرَ	الْبَحْرَ	لِتَاْكُلُوْا	مِنْهُ
जो नसीहत पकड़ते हैं	और वो ही है	जिसने	मुसख़्ख़र किया	समुन्दर को	ताकि तुम खाओ	उससे

لَحْمًا	طَرِيًّا	وَّتَسْتَخْرِجُوْا	مِنْهُ	حِلْيَةً	تَلْبَسُوْنَهَا ۚ
गोश्त	ताज़ा	और तुम निकालो	उससे	ज़ेवर	तुम पहनते हो उसे

وَتَرَى	الْفُلْكَ	مَوَاخِرَ	فِيْهِ	وَلِتَبْتَغُوْا	مِنْ فَضْلِهٖ
और तुम देखते हो	कश्तियां	कि फाड़ने वाली हैं	उसमें	और ताकि तुम तलाश करो	उसके फ़ज़्ल में से

وَلَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ⑭	وَاَلْقٰى	فِي الْاَرْضِ	رَوَاسِيَ	اَنْ
और ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	और उसने डाल दिए	ज़मीन में	पहाड़	कि

تَمِيْدَ	بِكُمْ	وَاَنْهٰرًا	وَّسُبُلًا	لَّعَلَّكُمْ	تَهْتَدُوْنَ ⑮ لَا
(ना) वो ढुलक जाए	तुम्हें लेकर	और नहरें	और रास्ते	ताकि तुम	तुम हिदायत पा जाओ

وَعَلٰمٰتٍ ؕ	وَبِالنَّجْمِ	هُمْ	يَهْتَدُوْنَ ⑯	اَفَمَنْ	يَّخْلُقُ
और अलामात (रख दीं)	और साथ सितारों के	वो	वो राह पाते हैं	क्या भला वो जो	पैदा करता है

كَمَنْ	لَّا يَخْلُقُ ؕ	اَفَلَا	تَذَكَّرُوْنَ ⑰	وَاِنْ	تَعُدُّوْا	نِعْمَةَ
मानिंद उसके है जो	नहीं पैदा करता	क्या भला नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	और अगर	तुम गिनना चाहो	नेअमतों को

اللّٰهِ	لَا تُحْصُوْهَا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَغَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ⑱	وَاللّٰهُ
अल्लाह की	नहीं तुम शुमार कर सकते उन्हें	बेशक	अल्लाह	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और अल्लाह

يَعْلَمُ	مَا	تُسِرُّوْنَ	وَمَا	تُعْلِنُوْنَ ⑲	وَالَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ
जानता है	जो कुछ	तुम छुपाते हो	और जो कुछ	तुम ज़ाहिर करते हो	और जिन्हें	वो पुकारते हैं

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	لَا يَخْلُقُوْنَ	شَيْـًٔا	وَّهُمْ	يُخْلَقُوْنَ ﴿20﴾	اَمْوَاتٌ
सिवाए	अल्लाह के	नहीं वो पैदा कर सकते	कोई चीज़	और वो	वो पैदा किए जाते हैं	मुर्दे हैं

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ	وَمَا	يَشْعُرُوْنَ ۙ	اَيَّانَ	يُبْعَثُوْنَ ﴿21﴾ ع	اِلٰهُكُمْ	اِلٰهٌ
ज़िंदा नहीं हैं	और नहीं	वो शऊर रखते	कि कब	वो उठाए जाऐंगे	इलाह तुम्हारा	इलाह है

ع 2 12 8

وَّاحِدٌ ۚ	فَالَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	قُلُوْبُهُمْ	مُّنْكِرَةٌ
एक ही	तो वो लोग जो	नहीं ईमान लाते	आख़िरत पर	दिल उनके	इंकारी हैं

وَّهُمْ	مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿22﴾	لَا جَرَمَ	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا	يُسِرُّوْنَ
और वो	तकब्बुर करने वाले हैं	नहीं कोई शक	यक़ीनन	अल्लाह	जानता है	जो कुछ	वो छुपाते हैं

وَمَا	يُعْلِنُوْنَ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿23﴾	وَاِذَا	قِيْلَ
और जो कुछ	वो ज़ाहिर करते हैं	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता	तकब्बुर करने वालों को	और जब	कहा जाता है

لَهُمْ	مَّاذَآ	اَنْزَلَ	رَبُّكُمْ ۙ	قَالُوْٓا	اَسَاطِيْرُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿24﴾ ۙ
उन्हें	क्या कुछ	उतारा	तुम्हारे रब ने	वो कहते हैं	कहानियां हैं	पहलों की

لِيَحْمِلُوْٓا	اَوْزَارَهُمْ	كَامِلَةً	يَّوْمَ	الْقِيٰمَةِ ۙ	وَمِنْ اَوْزَارِ	
ताकि वो उठा लें	बोझ अपने	पूरे	दिन	क़यामत के	और कुछ बोझ	

الَّذِيْنَ	يُضِلُّوْنَهُمْ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ؕ	اَلَا	سَآءَ	مَا	يَزِرُوْنَ ﴿25﴾ ع
उन लोगों के भी	वो गुमराह कर रहे हैं जिन्हें	बग़ैर	इल्म के	ख़बरदार	कितना बुरा है	जो	बोझ वो उठा रहे हैं

ع 3 4 9

قَدْ	مَكَرَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	فَاَتَى	اللّٰهُ	بُنْيَانَهُمْ
तहक़ीक़	चाल चली	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	तो आया	अल्लाह	उनकी इमारत को

مِّنَ الْقَوَاعِدِ	فَخَرَّ	عَلَيْهِمُ	السَّقْفُ	مِنْ فَوْقِهِمْ	وَاَتٰىهُمُ
बुनियादों से	तो गिर पड़ी	उन्हीं पर	छत	उनके ऊपर से	और आया उनके पास

الْعَذَابُ	مِنْ حَيْثُ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿26﴾	ثُمَّ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
अज़ाब	जहां से	नहीं वो शऊर रखते थे	फिर	दिन	क़यामत के

يُخْزِيْهِمْ	وَيَقُوْلُ	اَيْنَ	شُرَكَآءِيَ	الَّذِيْنَ	كُنْتُمْ	تُشَآقُّوْنَ
वो रुस्वा करेगा उन्हें	और वो कहेगा	कहां हैं	शरीक मेरे	वो जो	थे तुम	तुम झगड़ते

فِيْهِمْ ؕ	قَالَ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْعِلْمَ	اِنَّ	الْخِزْيَ	الْيَوْمَ
जिन (के बारे) में	कहेंगे	वो लोग जो	दिए गए	इल्म	बेशक	रुस्वाई	आज के दिन

وَالسُّوْٓءَ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿27﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	تَتَوَفّٰىهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ
और बुराई	काफ़िरों पर है	वो लोग जो	फ़ौत करते हैं उन्हें	फ़रिश्ते

ظَالِمِيْٓ	اَنْفُسِهِمْ ۠	فَاَلْقَوُا	السَّلَمَ	مَا كُنَّا	نَعْمَلُ
(जबकि वो) ज़ुल्म करने वाले हैं	अपनी जानों पर	तो वो पेश करते हैं	सिपर/सुलह	(कहते हैं) ना थे हम	हम करते

مِنْ سُوْٓءٍ ؕ	بَلٰٓى	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿28﴾
कोई बुराई	क्यों नहीं	बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	उसे जो	थे तुम	तुम अमल करते

فَادْخُلُوْٓا	اَبْوَابَ	جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	فَلَبِئْسَ	مَثْوَى
पस दाख़िल हो जाओ	दरवाज़ो में	जहन्नम के	हमेशा रहने वाले	उसमें	पस अलबत्ता कितना बुरा है	ठिकाना

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿29﴾	وَقِيْلَ	لِلَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	مَاذَآ	اَنْزَلَ	رَبُّكُمْ ؕ
तकब्बुर करने वालों का	और कहा जाता है	उनसे जिन्होंने	तक़वा किया	क्या कुछ	उतारा	तुम्हारे रब ने

قَالُوْا	خَيْرًا ؕ	لِلَّذِيْنَ	اَحْسَنُوْا	فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا	حَسَنَةٌ ؕ
वो कहते हैं	बहुत अच्छा	उनके लिए जिन्होंने	अच्छा किया	इस दुनिया में	भलाई है

وَلَدَارُ	الْاٰخِرَةِ	خَيْرٌ ؕ	وَلَنِعْمَ	دَارُ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿30﴾ ۙ	جَنّٰتُ
और अलबत्ता घर	आख़िरत का	बेहतर है	और अलबत्ता कितना अच्छा है	घर	मुत्तक़ीन का	बाग़ात

عَدْنٍ	يَّدْخُلُوْنَهَا	تَجْرِىْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	لَهُمْ	فِيْهَا
हमेशगी के	वो दाख़िल होंगे उनमें	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	उनके लिए	उसमें होगा

مَا	يَشَآءُوْنَ ؕ	كَذٰلِكَ	يَجْزِى	اللّٰهُ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿31﴾ لا	الَّذِيْنَ
जो कुछ	वो चाहेंगे	इसी तरह	बदला देगा	अल्लाह	मुत्तक़ी लोगों को	वो लोग जो

تَتَوَفّٰىهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	طَيِّبِيْنَ لا	يَقُوْلُوْنَ	سَلٰمٌ	عَلَيْكُمُ لا	
फ़ौत करते हैं उन्हें	फ़रिश्ते	(इस हाल में कि) वो पाक होते हैं	वो कहते हैं	सलाम है	तुम पर	

ادْخُلُوا	الْجَنَّةَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿32﴾	هَلْ	يَنْظُرُوْنَ
दाख़िल हो जाओ	जन्नत में	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम अमल करते	नहीं	वो इंतिज़ार कर रहे

اِلَّآ	اَنْ	تَاْتِيَهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	اَوْ	يَاْتِىَ	اَمْرُ	رَبِّكَ ؕ
मगर	ये कि	आ जाऐं उनके पास	फ़रिश्ते	या	आ जाए	हुक्म	आपके रब का

كَذٰلِكَ	فَعَلَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	وَمَا	ظَلَمَهُمُ	اللّٰهُ
इसी तरह	किया	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	और नहीं	ज़ुल्म किया था उन पर	अल्लाह ने

وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿33﴾	فَاَصَابَهُمْ	سَيِّاٰتُ	مَا
और लेकिन	थे वो	अपनी ही जानों पर	वो ज़ुल्म करते	तो पहुंचीं उन्हें	बुराईयां	उसकी जो

عَمِلُوْا	وَحَاقَ	بِهِمْ	مَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿34﴾ ع
उन्होंने अमल किए थे	और घेर लिया	उन्हें	जो	थे वो	जिसका	वो मज़ाक़ उड़ाते

ع 4 9 10

وَقَالَ	الَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْا	لَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مَا	عَبَدْنَا
और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	शिर्क किया	अगर	चाहता	अल्लाह	ना	इबादत करते हम

مِنْ دُوْنِهٖ	مِنْ شَىْءٍ	نَّحْنُ	وَلَآ	اٰبَآؤُنَا	وَلَا	حَرَّمْنَا
उसके सिवा	किसी चीज़ की	हम	और ना	आबा ओ अजदाद हमारे	और ना	हराम करते हम

مِنْ دُوْنِهٖ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	كَذٰلِكَ	فَعَلَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
उसके (हुक्म) के सिवा	किसी चीज़ को	इसी तरह	किया था	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे

فَهَلْ	عَلَى الرُّسُلِ	اِلَّا	الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ ﴿35﴾	وَلَقَدْ	بَعَثْنَا
तो नहीं है	रसूलों पर	मगर	पहुंचाना	खुल्लम-खुल्ला	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ	رَّسُوْلًا	اَنِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	وَاجْتَنِبُوا	الطَّاغُوْتَ ۚ
हर उम्मत में	एक रसूल	कि	इबादत करो	अल्लाह की	और बचो	ताग़ूत से

فَمِنْهُمْ	مَّنْ	هَدَى	اللّٰهُ	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	حَقَّتْ	عَلَيْهِ
तो बाज़ उनमें से थे	जिन्हें	हिदायत दी	अल्लाह ने	और बाज़ उनमें से थे	वो जो	साबित हो गई	उन पर

الضَّلٰلَةُ ؕ	فَسِيْرُوْا	فِي الْاَرْضِ	فَانْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ
गुमराही	पस चलो फिरो	ज़मीन में	फिर देखो	किस तरह	हुआ	अंजाम

الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿36﴾	اِنْ	تَحْرِصْ	عَلٰى هُدٰىهُمْ	فَاِنَّ	اللّٰهَ
झुठलाने वालों का	अगर	आप हरीस हैं	उनकी हिदायत पर	तो बेशक	अल्लाह

لَا يَهْدِيْ	مَنْ	يُّضِلُّ	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿37﴾
नहीं हिदायत देता	उसको जिसे	वो गुमराह करता है	और नहीं	उनके लिए	मददगारों में से कोई

وَاَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ	جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ ۙ	لَا يَبْعَثُ	اللّٰهُ	مَنْ
और वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	पक्की	क़समें अपनी	नहीं उठाएगा	अल्लाह	उसे जो

يَّمُوْتُ ؕ	بَلٰى	وَعْدًا	عَلَيْهِ	حَقًّا	وَّلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ
मर जाता है	क्यों नहीं	वादा है	उसके ज़िम्मे	सच्चा	और लेकिन	अक्सर	लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿38﴾ ۙ	لِيُبَيِّنَ	لَهُمُ	الَّذِيْ	يَخْتَلِفُوْنَ	فِيْهِ
नहीं वो इल्म रखते	ताकि वो बयान करे	उनके लिए	वो चीज़ जो	वो इख़्तिलाफ़ करते हैं	जिसमें

وَ لِيَعْلَمَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اَنَّهُمْ	كَانُوْا	كٰذِبِيْنَ ﴿39﴾	اِنَّمَا
और ताकि जान लें	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	बेशक वो	थे वो	झूठे	बेशक

قَوْلُنَا	لِشَيْءٍ	اِذَآ	اَرَدْنٰهُ	اَنْ	نَّقُوْلَ	لَهٗ	كُنْ
कहना हमारा	किसी चीज़ के लिए	जब	इरादा करते हैं हम उसका	ये कि	हम कहते है	उसे	हो जा

ع 5 6 11

فَيَكُوْنُ ﴿40﴾ ع	وَالَّذِيْنَ	هَاجَرُوْا	فِى اللّٰهِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	ظُلِمُوْا
तो वो हो जाती है	और वो जिन्होंने	हिजरत की	अल्लाह की राह में	बाद उसके	जो	वो ज़ुल्म किए गए

وقف لازم

لَنُبَوِّئَنَّهُمْ	فِى الدُّنْيَا	حَسَنَةً ؕ	وَ لَاَجْرُ	الْاٰخِرَةِ	اَكْبَرُ ۘ
अलबत्ता हम जरूर ठिकाना देंगे उन्हें	दुनिया में	अच्छा	और यक़ीनन अजर	आख़िरत का	सबसे बड़ा है

لَوْ	كَانُوْا	يَعْلَمُوْنَ ﴿41﴾ لا	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا	وَعَلٰى رَبِّهِمْ
काश	होते वो	वो जानते	वो जिन्होंने	सब्र किया	और अपने रब पर ही

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿42﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	اِلَّا	رِجَالًا	نُّوْحِيْٓ
वो भरोसा करते हैं	और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	मगर	मर्दों को	हम वही करते थे

اِلَيْهِمْ	فَسْـَٔلُوْٓا	اَهْلَ الذِّكْرِ	اِنْ	كُنْتُمْ	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿43﴾ لا
तरफ़ उनके	पस पूछ लो	अहले इल्म से	अगर	हो तुम	नहीं तुम जानते

بِالْبَيِّنٰتِ	وَالزُّبُرِ ؕ	وَ اَنْزَلْنَآ	اِلَيْكَ	الذِّكْرَ	لِتُبَيِّنَ	لِلنَّاسِ
साथ वाज़ेह दलाइल	और सहीफ़ों के	और नाज़िल किया हमने	तरफ़ आपके	ज़िक्र को	ताकि आप वाज़ेह करें	लोगों के लिए

النصف

مَا	نُزِّلَ	اِلَيْهِمْ	وَ لَعَلَّهُمْ	يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿44﴾	اَفَاَمِنَ	الَّذِيْنَ
जो कुछ	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	और ताकि वो	वो ग़ौरो फ़िक्र करें	क्या फिर बेख़ौफ़ हो गए	वो जिन्होंने

مَكَرُوا	السَّيِّاٰتِ	اَنْ	يَّخْسِفَ	اللّٰهُ	بِهِمُ	الْاَرْضَ	اَوْ
चालें चलीं	बुरी	कि	धंसा दे	अल्लाह	उन्हें	ज़मीन में	या

يَاْتِيَهُمُ	الْعَذَابُ	مِنْ حَيْثُ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿45﴾	اَوْ	يَاْخُذَهُمْ
आ जाए उनके पास	अज़ाब	जहां से	नहीं वो शऊर रखते	या	वो पकड़ ले उन्हें

فِيْ تَقَلُّبِهِمْ	فَمَا	هُمْ	بِمُعْجِزِيْنَ ﴿46﴾	اَوْ	يَاْخُذَهُمْ	عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ
उनके चलने फिरने में	तो नहीं	वो	आजिज़ करने वाले	या	वो पकड़ ले उन्हें	ख़ौफ़ज़दा होने पर

فَاِنَّ	رَبَّكُمْ	لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ﴿47﴾	اَوَ لَمْ	يَرَوْا	اِلٰى مَا
तो बेशक	रब तुम्हारा	अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	क्या भला नहीं	वो देखते	तरफ़ उसके जो

خَلَقَ	اللّٰهُ	مِنْ شَيْءٍ	يَّتَفَيَّؤُا	ظِلٰلُهٗ	عَنِ الْيَمِيْنِ	وَالشَّمَآئِلِ
पैदा की	अल्लाह ने	कोई भी चीज़	झुकते हैं	साए उसके	दाऐं से	और बाऐं से

سُجَّدًا	لِّلّٰهِ	وَهُمْ	دٰخِرُوْنَ ﴿48﴾	وَلِلّٰهِ	يَسْجُدُ	مَا
सज्दा करते हुए	अल्लाह के लिए	इस हाल में कि वो	आजिज़ी करने वाले हैं	और अल्लाह ही के लिए	सज्दा करते हैं	जो

فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ	مِنْ دَآبَّةٍ	وَّالْمَلٰٓئِكَةُ	وَهُمْ
आसमानों में हैं	और जो	ज़मीन में हैं	जानदारों में से	और फ़रिश्ते	और वो

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿49﴾	يَخَافُوْنَ	رَبَّهُمْ	مِّنْ فَوْقِهِمْ	وَيَفْعَلُوْنَ	مَا
नहीं वो तकब्बुर करते	वो डरते हैं	अपने रब से	अपने ऊपर से	और वो करते हैं	जो

يُؤْمَرُوْنَ ﴿50﴾ السجدة ع	وَقَالَ	اللّٰهُ	لَا تَتَّخِذُوْٓا	اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ	اِنَّمَا
वो हुक्म दिए जाते हैं	और फ़रमाया	अल्लाह ने	ना तुम बनाओ	दो इलाह	बेशक

ع 6 10 12 السجدة 3

هُوَ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ۚ	فَاِيَّايَ	فَارْهَبُوْنِ ﴿51﴾	وَلَهٗ	مَا
वो	इलाह है	एक ही	तो सिर्फ़ मुझ ही से	पस डरो मुझसे	और उसी के लिए है	जो कुछ

فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَلَهُ	الدِّيْنُ	وَاصِبًا ؕ	اَفَغَيْرَ اللّٰهِ
आसमानों में	और ज़मीन में है	और उसी के लिए है	दीन	दायमी	क्या फिर ग़ैर अल्लाह से

تَتَّقُوْنَ ﴿52﴾	وَمَا	بِكُمْ	مِّنْ نِّعْمَةٍ	فَمِنَ اللّٰهِ	ثُمَّ	اِذَا
तुम डरते हो	और जो भी है	तुम्हारे पास	कोई नेअमत	पस अल्लाह की तरफ़ से है	फिर	जब

مَسَّكُمُ	الضُّرُّ	فَاِلَيْهِ	تَجْـَٔرُوْنَ ﴿53﴾ ج	ثُمَّ	اِذَا	كَشَفَ	الضُّرَّ
पहुंचती है तुम्हें	तकलीफ़	तो तरफ़ उसी के	तुम फ़रियाद करते हो	फिर	जब	वो हटा देता है	तकलीफ़ को

عَنْكُمْ	اِذَا	فَرِيْقٌ	مِّنْكُمْ	بِرَبِّهِمْ	يُشْرِكُوْنَ ﴿54﴾ لا	لِيَكْفُرُوْا
तुमसे	यकायक	एक गिरोह (के लोग)	तुम में से	साथ अपने रब के	वो शरीक ठहराते हैं	ताकि वो नाशुक्री करें

بِمَآ	اٰتَيْنٰهُمْ ط	فَتَمَتَّعُوْا قف	فَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ﴿55﴾	وَيَجْعَلُوْنَ	لِمَا
उसकी जो	दिया हमने उन्हें	तो तुम फ़ायदे उठा लो	पस अनक़रीब	तुम जान लोगे	और वो मुक़र्रर करते हैं	उसके लिए जो

لَا يَعْلَمُوْنَ	نَصِيْبًا	مِّمَّا	رَزَقْنٰهُمْ ط	تَاللّٰهِ	لَتُسْـَٔلُنَّ
नहीं वो जानते	एक हिस्सा	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तुम ज़रूर सवाल किए जाओगे

عَمَّا	كُنْتُمْ	تَفْتَرُوْنَ ﴿56﴾	وَيَجْعَلُوْنَ	لِلّٰهِ	الْبَنٰتِ
उसके बारे में जो	थे तुम	तुम गढ़ते	और वो बनाते हैं	अल्लाह के लिए	बेटियां

سُبْحٰنَهٗ لا	وَلَهُمْ	مَّا	يَشْتَهُوْنَ ﴿57﴾	وَاِذَا	بُشِّرَ	اَحَدُهُمْ
पाक है वो	और उनके लिए है	जो	वो ख़्वाहिश रखते हैं	और जब	ख़ुशख़बरी दी जाती है	उनमें से एक को

بِالْاُنْثٰى	ظَلَّ	وَجْهُهٗ	مُسْوَدًّا	وَّهُوَ	كَظِيْمٌ ﴿58﴾ ج	يَتَوَارٰى
लड़की की	हो जाता है	चेहरा उसका	स्याह	और वो	सख़्त ग़मगीन होता है	वो छुपता है

مِنَ الْقَوْمِ	مِنْ سُوْٓءِ	مَا	بُشِّرَ	بِهٖ ط	اَيُمْسِكُهٗ	عَلٰى هُوْنٍ
क़ौम से	बसबब आर के	जो	वो ख़ुशख़बरी दिया गया	जिस की	क्या वो रोके रखे उसे	साथ ज़िल्लत के

اَمْ	يَدُسُّهٗ	فِي التُّرَابِ ط	اَلَا	سَآءَ	مَا	يَحْكُمُوْنَ ﴿59﴾	لِلَّذِيْنَ
या	वो दबा दे उसे	मिट्टी में	ख़बरदार	कितना बुरा है	जो	वो फ़ैसला करते हैं	उन लोगों के लिए जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	مَثَلُ	السَّوْءِ ۚ	وَلِلّٰهِ	الْمَثَلُ	الْاَعْلٰى ؕ
नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	मिसाल है	बुरी	और अल्लाह के लिए	मिसाल है	आला

وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ﴿60﴾ ع	وَلَوْ	يُؤَاخِذُ	اللّٰهُ	النَّاسَ
और वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	और अगर	मुआख़िज़ा करे	अल्लाह	लोगों का

ع 7 10 13

بِظُلْمِهِمْ	مَّا	تَرَكَ	عَلَيْهَا	مِنْ دَآبَّةٍ	وَّلٰكِنْ	يُّؤَخِّرُهُمْ
बवजह उनके ज़ुल्म के	ना	वो छोड़े	इस (ज़मीन) पर	कोई जानदार	और लेकिन	वो मोहलत दे रहा है उन्हें

اِلٰٓى اَجَلٍ	مُّسَمًّى ۚ	فَاِذَا	جَآءَ	اَجَلُهُمْ	لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ	سَاعَةً
एक मुद्दत तक	मुक़र्रर	फिर जब	आ जाएगा	उनका वक़्ते मुक़र्रर	ना वो पीछे रहेंगे	एक घड़ी

وَّلَا	يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿61﴾	وَيَجْعَلُوْنَ	لِلّٰهِ	مَا	يَكْرَهُوْنَ
और ना	वो आगे बढ़ सकेंगे	और वो मुक़र्रर करते हैं	अल्लाह के लिए	जो	वो (ख़ुद) नापसंद करते हैं

وَتَصِفُ	اَلْسِنَتُهُمُ	الْكَذِبَ	اَنَّ	لَهُمُ	الْحُسْنٰى ؕ	لَا جَرَمَ
और बयान करती हैं	ज़बानें उनकी	झूठ	कि बेशक	उनके लिए	भलाई है	नहीं कोई शक

اَنَّ	لَهُمُ	النَّارَ	وَاَنَّهُمْ	مُّفْرَطُوْنَ ﴿62﴾	تَاللّٰهِ	لَقَدْ
यक़ीनन	उनके लिए	आग है	और यक़ीनन वो	आगे पहुंचाए जाने वाले हैं	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तहक़ीक़

اَرْسَلْنَآ	اِلٰٓى اُمَمٍ	مِّنْ قَبْلِكَ	فَزَيَّنَ	لَهُمُ	الشَّيْطٰنُ
भेजा हमने (रसूलों को)	तरफ़ कुछ क़ौमों के	आपसे पहले	तो मुज़य्यन कर दिया	उनके लिए	शैतान ने

اَعْمَالَهُمْ	فَهُوَ	وَلِيُّهُمُ	الْيَوْمَ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿63﴾
उनके आमाल को	पस वो ही	दोस्त है उनका	आज	और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक

وَمَآ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	اِلَّا	لِتُبَيِّنَ	لَهُمُ	الَّذِى
और नहीं	नाज़िल किया हमने	आप पर	किताब को	मगर	ताकि आप वाज़ेह करें	उनके लिए	वो चीज़

اخْتَلَفُوْا	فِيْهِ ؕ	وَهُدًى	وَّرَحْمَةً	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿64﴾	وَاللّٰهُ
उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	जिसमें	और हिदायत	और रहमत	उन लोगों के लिए	जो ईमान रखते हैं	और अल्लाह ने

اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَحْيَا	بِهِ	الْاَرْضَ	بَعْدَ	مَوْتِهَا ؕ
उतारा	आसमान से	पानी	फिर ज़िंदा कर दिया	साथ उसके	ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के

ع 8 5 14

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ	يَّسْمَعُوْنَ ﴿65﴾ ع	وَاِنَّ	لَكُمْ
बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए	जो सुनते हैं	और बेशक	तुम्हारे लिए

فِي الْاَنْعَامِ	لَعِبْرَةً ؕ	نُسْقِيْكُمْ	مِّمَّا	فِيْ بُطُوْنِهٖ	مِنْۢ بَيْنِ	
मवेशी जानवरों में	अलबत्ता इबरत है	हम पिलाते हैं तुम्हें	उसमें से जो	उनके पेटों में है	दर्मियान	

فَرْثٍ	وَّدَمٍ	لَّبَنًا	خَالِصًا	سَآئِغًا	لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿66﴾	وَمِنْ ثَمَرٰتِ
गोबर	और ख़ून के	दूध	ख़ालिस	ख़ुशगवार	पीने वालों के लिए	और फलों में से

النَّخِيْلِ	وَالْاَعْنَابِ	تَتَّخِذُوْنَ	مِنْهُ	سَكَرًا	وَّرِزْقًا	حَسَنًا ؕ
खजूर	और अंगूर	तुम बना लेते हो	उससे	नशा आवर चीज़	और रिज़्क़	अच्छा

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ ﴿67﴾	وَاَوْحٰى	رَبُّكَ
बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	और वही की	आपके रब ने

اِلَى النَّحْلِ	اَنِ	اتَّخِذِيْ	مِنَ الْجِبَالِ	بُيُوْتًا	وَّمِنَ الشَّجَرِ
तरफ़ शहद की मक्खी के	कि	तू बना ले	पहाड़ों में से	घर	और दरख़्तों में से

وَمِمَّا	يَعْرِشُوْنَ ﴿68﴾ ۙ	ثُمَّ	كُلِيْ	مِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ	فَاسْلُكِيْ
और उसमें से जो	वो ऊपर चढ़ाते हैं	फिर	खा	हर क़िस्म से	फलों की	फिर चलती रह

سُبُلَ	رَبِّكِ	ذُلُلًا ؕ	يَخْرُجُ	مِنْۢ بُطُوْنِهَا	شَرَابٌ
रास्तों पर	अपने रब के	हमवार/आसान	निकलता है	उसके पेटों से	शरबत/शहद

مُّخْتَلِفٌ	اَلْوَانُهٗ	فِيْهِ	شِفَآءٌ	لِّلنَّاسِ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً
मुख़्तलिफ़ हैं	रंग उसके	उसमें	शिफ़ा है	लोगों के लिए	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता निशानी है

لِّقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿69﴾	وَاللّٰهُ	خَلَقَكُمْ	ثُمَّ	يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ	وَمِنْكُمْ
उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	और अल्लाह ने	पैदा किया तुम्हें	फिर	वो फ़ौत करता है तुम्हें	और तुम में से

مَّنْ	يُّرَدُّ	اِلٰٓى	اَرْذَلِ الْعُمُرِ	لِكَيْ	لَا يَعْلَمَ	بَعْدَ	عِلْمٍ
कोई	फेरा जाता है	तरफ़	नाकारा उम्र के	ताकि	ना वो जाने	बाद	जानने के

شَيْـًٔا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	قَدِيْرٌ ﴿70﴾ ع	وَاللّٰهُ	فَضَّلَ	بَعْضَكُمْ	ع 9 5 15
कुछ भी	बेशक	अल्लाह	बहुत इल्म वाला है	ख़ूब क़ुदरत वाला है	और अल्लाह ने	फ़ज़ीलत दी	तुम्हारे बाज़ को	

عَلٰى بَعْضٍ	فِى الرِّزْقِ ۚ	فَمَا	الَّذِيْنَ	فُضِّلُوْا	بِرَآدِّيْ	رِزْقِهِمْ
बाज़ पर	रिज़्क़ में	तो नहीं	वो लोग जो	फ़ज़ीलत दिए गए	लौटाने वाले	रिज़्क़ अपना

عَلٰى	مَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُهُمْ	فَهُمْ	فِيْهِ	سَوَآءٌ ؕ	اَفَبِنِعْمَةِ
ऊपर	उनके जो	मालिक हुए	दाऐं हाथ उनके	तो वो	उसमें	यकसां/बराबर हों	क्या फिर नेअमत का

اللّٰهِ	يَجْحَدُوْنَ ﴿71﴾	وَاللّٰهُ	جَعَلَ	لَكُمْ	مِّنْ اَنْفُسِكُمْ	اَزْوَاجًا
अल्लाह की	वो इंकार करते हैं	और अल्लाह ने	बनाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे नफ़्सों से	बीवियों को

وَّجَعَلَ	لَكُمْ	مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ	بَنِيْنَ	وَحَفَدَةً	وَّرَزَقَكُمْ
और उसने बनाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारी बीवियों से	बेटों	और पोतों को	और उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ	اَفَبِالْبَاطِلِ	يُؤْمِنُوْنَ	وَبِنِعْمَتِ	اللّٰهِ	هُمْ
पाकीज़ा चीज़ों से	क्या फिर बातिल पर	वो ईमान रखते हैं	और नेअमत का	अल्लाह की	वो

يَكْفُرُوْنَ ﴿72﴾ ۙ	وَيَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَا يَمْلِكُ	لَهُمْ
वो इंकार करते हैं	और वो इबादत करते हैं	सिवाए	अल्लाह के	उनकी जो	नहीं मालिक होते	उनके लिए

رِزْقًا	مِّنَ السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	شَيْـًٔا	وَّلَا	يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿73﴾ ج	فَلَا
रिज़्क़ के	आसमानों से	और ज़मीन से	कुछ भी	और ना	वो इस्तिताअत रखते हैं	पस ना

تَضْرِبُوْا	لِلّٰهِ	الْاَمْثَالَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	وَاَنْتُمْ
तुम बयान करो	अल्लाह के लिए	मिसालें	बेशक	अल्लाह	जानता है	और तुम

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿74﴾	ضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	عَبْدًا	مَّمْلُوْكًا	لَّا يَقْدِرُ
नहीं तुम जानते	बयान की	अल्लाह ने	मिसाल	एक ग़ुलाम	ममलूक की	नहीं वो क़ुदरत रखता

عَلٰى شَيْءٍ	وَّمَنْ	رَّزَقْنٰهُ	مِنَّا	رِزْقًا	حَسَنًا	فَهُوَ
किसी चीज़ पर	और उसकी जो	रिज़्क़ दिया हमने उसे	अपनी तरफ़ से	रिज़्क़	अच्छा	तो वो

يُنْفِقُ	مِنْهُ	سِرًّا	وَّجَهْرًا ؕ	هَلْ	يَسْتَوٗنَ ؕ	اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ ؕ
ख़र्च करता है	उसमें से	पोशीदा	और एलानिया	क्या	वो बराबर हो सकते हैं	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है

بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿75﴾	وَضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	رَّجُلَيْنِ
बल्कि	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	और बयान की	अल्लाह ने	एक मिसाल	दो मर्दों की

اَحَدُهُمَآ	اَبْكَمُ	لَا يَقْدِرُ	عَلٰى شَيْءٍ	وَّهُوَ	كَلٌّ	عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ
उन दोनों में से एक	गूंगा है	नहीं वो क़ुदरत रखता	किसी चीज़ पर	और वो	बोझ है	अपने मालिक पर

اَيْنَمَا	يُوَجِّهْهُّ	لَا يَاْتِ	بِخَيْرٍ ؕ	هَلْ	يَسْتَوِيْ	هُوَ ۙ	وَمَنْ
जहां कहीं	वो भेजता है उसे	नहीं वो लाता	कोई भलाई	क्या	बराबर हो सकता है	वो	और वो जो

ع 10 6 16

يَّاْمُرُ	بِالْعَدْلِ ۙ	وَهُوَ	عَلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿76﴾ ع	وَلِلّٰهِ	غَيْبُ
हुक्म देता है	इंसाफ़ का	और वो	ऊपर रास्ते	सीधे के है	और अल्लाह ही के लिए है	ग़ैब

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَمَآ	اَمْرُ	السَّاعَةِ	اِلَّا	كَلَمْحِ	الْبَصَرِ
आसमानों	और ज़मीन का	और नहीं	मामला	क़यामत का	मगर	जैसे झपकना	आंख का

اَوۡ	هُوَ	اَقۡرَبُ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَىۡءٍ	قَدِيۡرٌ ﴿77﴾
या	है वो	उससे भी ज़्यादा क़रीब	बेशक	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है

وَاللّٰهُ	اَخۡرَجَكُمۡ	مِّنۡۢ بُطُوۡنِ	اُمَّهٰتِكُمۡ	لَا تَعۡلَمُوۡنَ	شَيۡـًٔا ۙ	وَّجَعَلَ
और अल्लाह ने	निकाला तुम्हें	पेटों से	तुम्हारी मांओं के	नहीं तुम जानते थे	कुछ भी	और उसने बनाए

لَكُمُ	السَّمۡعَ	وَالۡاَبۡصَارَ	وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ۙ	لَعَلَّكُمۡ	تَشۡكُرُوۡنَ ﴿78﴾	اَلَمۡ
तुम्हारे लिए	कान	और आंखें	और दिल	ताकि तुम	तुम शुक्र गुज़ार बनो	क्या नहीं

يَرَوۡا	اِلَى الطَّيۡرِ	مُسَخَّرٰتٍ	فِىۡ جَوِّ	السَّمَآءِ ؕ	مَا	يُمۡسِكُهُنَّ
उन्होंने देखा	तरफ़ परिंदों के	जो मुसख़्ख़र किए गए हैं	फ़िज़ा में	आसमान की	नहीं	थामे हुए उन्हें

اِلَّا	اللّٰهُ ؕ	اِنَّ	فِىۡ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوۡمٍ	يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿79﴾	وَاللّٰهُ
मगर	अल्लाह	बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	और अल्लाह ने

جَعَلَ	لَكُمۡ	مِّنۡۢ بُيُوۡتِكُمۡ	سَكَنًا	وَّجَعَلَ	لَكُمۡ	مِّنۡ جُلُوۡدِ
बनाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे घरों को	रहने की जगह	और उसने बनाया	तुम्हारे लिए	खालों से

الۡاَنۡعَامِ	بُيُوۡتًا	تَسۡتَخِفُّوۡنَهَا	يَوۡمَ	ظَعۡنِكُمۡ	وَيَوۡمَ	اِقَامَتِكُمۡ ۙ
मवेशियों की	घरों को	तुम हल्का-फुल्का पाते हो उन्हें	दिन	अपने सफ़र के	और दिन	अपनी इक़ामत के

وَمِنۡ اَصۡوَافِهَا	وَاَوۡبَارِهَا	وَاَشۡعَارِهَآ	اَثَاثًا	وَّمَتَاعًا
और उनकी ऊन से	और उनकी पशम से	और उनके बालों से	सामान	और फ़ायदे की चीज़ें

اِلٰى حِيۡنٍ ﴿80﴾	وَاللّٰهُ	جَعَلَ	لَكُمۡ	مِّمَّا	خَلَقَ	ظِلٰلًا	وَّجَعَلَ
एक वक़्त तक	और अल्लाह ने	बनाए	तुम्हारे लिए	उसमें से जो	उसने पैदा किए	साये	और उसने बनाईं

لَكُمۡ	مِّنَ الۡجِبَالِ	اَكۡنَانًا	وَّجَعَلَ	لَكُمۡ	سَرَابِيۡلَ	تَقِيۡكُمُ
तुम्हारे लिए	पहाड़ों में	छुपने की जगहें	और उसने बनाए	तुम्हारे लिए	कुर्ते	जो बचाते हैं तुम्हें

الْحَرَّ	وَ سَرَابِيْلَ	تَقِيْكُمُ	بَاْسَكُمْ ؕ	كَذٰلِكَ	يُتِمُّ	نِعْمَتَهٗ
गर्मी से	और कुर्ते	जो बचाते हैं तुम्हें	तुम्हारी जंग से	इसी तरह	वो पूरा करता है	अपनी नेअमत को

عَلَيْكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تُسْلِمُوْنَ ﴿81﴾	فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاِنَّمَا	عَلَيْكَ
तुम पर	ताकि तुम	तुम फ़रमांबरदार बन जाओ	फिर अगर	वो मुंह मोड़ जाऐं	तो बेशक	आप पर

الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ ﴿82﴾	يَعْرِفُوْنَ	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	ثُمَّ	يُنْكِرُوْنَهَا
पहुंचाना है	खुल्लम-खुल्ला	वो पहचानते हैं	नेअमत को	अल्लाह की	फिर	वो इंकार करते हैं

ع 11 7 17

وَ اَكْثَرُهُمُ	الْكٰفِرُوْنَ ﴿83﴾ ع	وَ يَوْمَ	نَبْعَثُ	مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ	شَهِيْدًا
और अक्सर उनके	नाशुक्रे हैं	और जिस दिन	हम खड़ा करेंगे	हर उम्मत से	एक गवाह

ثُمَّ	لَا يُؤْذَنُ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَ لَا	هُمْ	يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿84﴾	وَ اِذَا
फिर	ना इजाज़त दी जाएगी	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	और ना	वो	वो उज़र क़ुबूल किए जाऐंगे	और जब

رَاَ	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	الْعَذَابَ	فَلَا	يُخَفَّفُ	عَنْهُمْ	وَ لَا
देखेंगे	वो लोग जिन्होंने	ज़ुल्म किया	अज़ाब को	तो ना	तख़फ़ीफ़ की जाएगी	उनसे	और ना

هُمْ	يُنْظَرُوْنَ ﴿85﴾	وَ اِذَا	رَاَ	الَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْا	شُرَكَآءَهُمْ
वो	वो मोहलत दिए जाऐंगे	और जब	देखेंगे	वो लोग जिन्होंने	शरीक बनाए	अपने शरीकों को

قَالُوْا	رَبَّنَا	هٰٓؤُلَآءِ	شُرَكَآؤُنَا	الَّذِيْنَ	كُنَّا	نَدْعُوْا
वो कहेंगे	ऐ हमारे रब	ये हैं	शरीक हमारे	वो जिन्हें	थे हम	हम पुकारते

الثلثة

مِنْ دُوْنِكَ ۚ	فَاَلْقَوْا	اِلَيْهِمُ	الْقَوْلَ	اِنَّكُمْ	لَكٰذِبُوْنَ ﴿86﴾ ۚ	وَ اَلْقَوْا
तेरे सिवा	तो वो डालेंगे	तरफ़ उनके	बात को	बेशक तुम	अलबत्ता झूठे हो	और वो पेश करेंगे

اِلَى اللّٰهِ	يَوْمَئِذِ	السَّلَمَ	وَ ضَلَّ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ ﴿87﴾
तरफ़ अल्लाह के	उस दिन	सुलह	और गुम हो जाऐंगे	उनसे	जो	थे वो	वो झूठ गढ़ते

اَلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَصَدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	زِدْنٰهُمْ	عَذَابًا
वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	और रोका	अल्लाह के रास्ते से	ज़्यादा देंगे हम उन्हें	अज़ाब

فَوْقَ الْعَذَابِ	بِمَا	كَانُوْا	يُفْسِدُوْنَ ﴿88﴾	وَيَوْمَ	نَبْعَثُ
ऊपर अज़ाब के	बवजह उसके जो	थे वो	वो फ़साद करते	और जिस दिन	हम उठाऐंगे

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ	شَهِيْدًا	عَلَيْهِمْ	مِّنْ اَنْفُسِهِمْ	وَجِئْنَا بِكَ	شَهِيْدًا
हर उम्मत में	एक गवाह	उन पर	उन्हीं में से	और हम लाऐंगे आपको	गवाह बनाकर

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ	وَنَزَّلْنَا	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	تِبْيَانًا	لِّكُلِّ شَيْءٍ
उन लोगों पर	और नाज़िल की हमने	आप पर	किताब	खोल कर बयान करने वाली	हर चीज़ को

وَّهُدًى	وَّرَحْمَةً	وَّبُشْرٰى	لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿89﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ	يَاْمُرُ
और हिदायत	और रहमत	और ख़ुशख़बरी	मुसलमानों के लिए	बेशक	अल्लाह	हुक्म देता है

ع 12 6 18

بِالْعَدْلِ	وَالْاِحْسَانِ	وَاِيْتَآئِ	ذِي الْقُرْبٰى	وَيَنْهٰى	عَنِ الْفَحْشَآءِ
अदल का	और एहसान का	और देने का	क़राबत दारों को	और वो रोकता है	बेहयाई से

وَالْمُنْكَرِ	وَالْبَغْيِ ۚ	يَعِظُكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُوْنَ ﴿90﴾	وَاَوْفُوْا	بِعَهْدِ
और बुराई	और ज़्यादती से	वो नसीहत करता है तुम्हें	ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	और पूरा करो	अहद को

اللّٰهِ	اِذَا	عٰهَدْتُّمْ	وَلَا	تَنْقُضُوا	الْاَيْمَانَ	بَعْدَ	تَوْكِيْدِهَا
अल्लाह के	जब	अहद करो तुम	और ना	तुम तोड़ो	क़समों को	बाद	उनके पक्का करने के

وَقَدْ	جَعَلْتُمُ	اللّٰهَ	عَلَيْكُمْ	كَفِيْلًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا
हालांकि तहक़ीक़	बना लिया तुमने	अल्लाह को	अपने ऊपर	ज़ामिन	बेशक	अल्लाह	जानता है	जो

تَفْعَلُوْنَ ﴿91﴾	وَلَا	تَكُوْنُوْا	كَالَّتِيْ	نَقَضَتْ	غَزْلَهَا	مِنْ بَعْدِ
तुम करते हो	और ना	तुम हो जाओ	उस औरत की तरह	जिसने तोड़ डाला	सूत अपना	बाद

قُوَّةٍ	اَنْكَاثًا ؕ	تَتَّخِذُوْنَ	اَيْمَانَكُمْ	دَخَلًا	بَيْنَكُمْ	اَنْ
मज़बूत (कातने) के	टुकड़े-टुकड़े कर के	तुम बना लेते हो	अपनी क़समों को	बहाना	आपस में	ताकि

تَكُوْنَ	اُمَّةٌ	هِيَ	اَرْبٰى	مِنْ اُمَّةٍ ؕ	اِنَّمَا	يَبْلُوْكُمُ	اللّٰهُ
हो जाए	एक जमाअत	वो	ज़्यादा बढ़ी हुई (माल में)	(दूसरी) जमाअत से	बेशक	आज़माता है तुम्हें	अल्लाह

بِهٖ ؕ	وَلَيُبَيِّنَنَّ	لَكُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	مَا	كُنْتُمْ	فِيْهِ
साथ उसके	और अलबत्ता वो ज़रूर वाज़ेह करेगा	तुम्हारे लिए	दिन	क़यामत के	वो जो	थे तुम	जिसमें

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿92﴾	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَجَعَلَكُمْ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً	وَّلٰكِنْ
तुम इख़्तिलाफ़ करते	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो बना देता तुम्हें	उम्मत	एक ही	और लेकिन

يُّضِلُّ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَلَتُسْـَٔلُنَّ
वो गुमराह करता है	जिसे	वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	और अलबत्ता तुम ज़रूर सवाल किए जाओगे

عَمَّا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿93﴾	وَلَا	تَتَّخِذُوْٓا	اَيْمَانَكُمْ	دَخَلًا
उसके बारे में जो	थे तुम	तुम अमल करते	और ना	तुम बनाओ	अपनी क़समों को	धोखा देने का ज़रिया

بَيْنَكُمْ	فَتَزِلَّ	قَدَمٌ	بَعْدَ	ثُبُوْتِهَا	وَتَذُوْقُوا	السُّوْٓءَ
आपस में	वरना फिसल जाएगा	क़दम	बाद	उसके जम जाने के	और तुम चखोगे	बुराई/सज़ा

بِمَا	صَدَدْتُّمْ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ	وَلَكُمْ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ﴿94﴾	
बवजह उसके जो	रोका तुमने	अल्लाह के रास्ते से	और तुम्हारे लिए	अज़ाब है	बहुत बड़ा	

وَلَا	تَشْتَرُوْا	بِعَهْدِ اللّٰهِ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ	اِنَّمَا	عِنْدَ اللّٰهِ
और ना	तुम लो	बदले अल्लाह के अहद के	क़ीमत	थोड़ी	बेशक जो	अल्लाह के पास है

هُوَ	خَيْرٌ	لَّكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿95﴾	مَا	عِنْدَكُمْ
वो	बेहतर है	तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम	तुम जानते	जो कुछ	तुम्हारे पास है

يَنْفَدُ	وَمَا	عِنْدَ اللّٰهِ	بَاقٍ ؕ	وَلَنَجْزِيَنَّ	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْٓا
ख़त्म हो जाएगा	और जो कुछ	अल्लाह के पास है	बाक़ी रहने वाला है	और अलबत्ता हम ज़रूर बदले में देंगे	उनको जिन्होंने	सब्र किया

اَجْرَهُمْ	بِاَحْسَنِ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿96﴾	مَنْ	عَمِلَ	صَالِحًا
अजर उनका	बेहतरीन	उसका जो	थे वो	वो अमल करते	जिसने	अमल किया	नेक

مِّنْ ذَكَرٍ	اَوْ	اُنْثٰى	وَهُوَ	مُؤْمِنٌ	فَلَنُحْيِيَنَّهٗ	حَيٰوةً	طَيِّبَةً ۚ
ख़्वाह कोई मर्द हो	या	औरत	जबकि वो	मोमिन हो	पस अलबत्ता हम ज़रूर ज़िंदगी देंगे उसे	ज़िंदगी	पाकीज़ा

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ	اَجْرَهُمْ	بِاَحْسَنِ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿97﴾
और अलबता हम ज़रूर बदले में देंगे उन्हें	अजर उनका	बेहतरीन	उसका जो	थे वो	वो अमल करते

فَاِذَا	قَرَاْتَ	الْقُرْاٰنَ	فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	الرَّجِيْمِ ﴿98﴾
फिर जब	पढ़ें आप	क़ुरआन को	तो पनाह मांगिए	अल्लाह की	शैतान से	जो मरदूद है

اِنَّهٗ	لَيْسَ	لَهٗ	سُلْطٰنٌ	عَلَى الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَلٰى رَبِّهِمْ
बेशक वो	नहीं है	उसका	कोई ज़ोर	उन लोगों पर जो	ईमान लाए	और अपने रब पर ही

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿99﴾	اِنَّمَا	سُلْطٰنُهٗ	عَلَى الَّذِيْنَ	يَتَوَلَّوْنَهٗ	وَالَّذِيْنَ
वो तवक्कल करते हैं	बेशक	ज़ोर उसका	उन लोगों पर है जो	दोस्त बनाते हैं उसे	और (उन पर) जो

هُمْ	بِهٖ	مُشْرِكُوْنَ ﴿100﴾ ع	وَاِذَا	بَدَّلْنَآ	اٰيَةً	مَّكَانَ	اٰيَةٍ ۙ
वो	उसकी वजह से	शिर्क करने वाले हैं	और जब	बदल देते हैं हम	किसी आयत को	जगह	आयत के

ع 13 11 19

وَّاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	يُنَزِّلُ	قَالُوْٓا	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مُفْتَرٍ ؕ
और अल्लाह	ख़ूब जानता है	उसको जो	वो नाज़िल करता है	वो कहते हैं	बेशक	तू	गढ़ने वाला है

بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿101﴾	قُلْ	نَزَّلَهٗ	رُوْحُ الْقُدُسِ
बल्कि	अक्सर उनके	नहीं वो जानते	कह दीजिए	नाज़िल किया है उसे	रूहुल क़ुदुस ने

مِنْ رَّبِّكَ	بِالْحَقِّ	لِيُثَبِّتَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَهُدًى	وَّبُشْرٰى
आपके रब की तरफ़ से	साथ हक़ के	ताकि वो साबित क़दम रखे	उन्हें जो	ईमान लाए	और हिदायत	और ख़ुशख़बरी है

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿102﴾	وَلَقَدْ	نَعْلَمُ	اَنَّهُمْ	يَقُوْلُوْنَ	اِنَّمَا	يُعَلِّمُهٗ
मुसलमानों के लिए	और अलबत्ता तहक़ीक़	हम जानते हैं	बेशक वो	वो कहते हैं	बेशक	सिखाता है उसे

بَشَرٌ ؕ	لِسَانُ	الَّذِيْ	يُلْحِدُوْنَ	اِلَيْهِ	اَعْجَمِيٌّ	وَّهٰذَا
एक इंसान	ज़बान	इसकी	वो ग़लत निस्बत करते हैं	तरफ़ जिसके	अजमी है	और ये

لِسَانٌ	عَرَبِيٌّ	مُّبِيْنٌ ﴿103﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ
ज़बान है	अरबी	वाज़ेह	बेशक	वो लोग जो	नहीं ईमान लाते	साथ अल्लाह की आयात के

لَا يَهْدِيْهِمُ	اللّٰهُ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿104﴾	اِنَّمَا	يَفْتَرِى
नहीं हिदायत देता उन्हें	अल्लाह	और उनके लिए है	अज़ाब	दर्दनाक	बेशक	गढ़ लेते हैं

الْكَذِبَ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ ۚ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ
झूठ को	वो लोग जो	नहीं ईमान लाते	साथ आयात के	अल्लाह की	और यही लोग हैं	वो

الْكٰذِبُوْنَ ﴿105﴾	مَنْ	كَفَرَ	بِاللّٰهِ	مِنْۢ بَعْدِ	اِيْمَانِهٖٓ	اِلَّا	مَنْ
जो झूठे हैं	जो कोई	कुफ़्र करे	साथ अल्लाह के	बाद	अपने ईमान लाने के	सिवाए	उसके जो

اُكْرِهَ	وَقَلْبُهٗ	مُطْمَئِنٌّۢ	بِالْاِيْمَانِ	وَلٰكِنْ	مَّنْ	شَرَحَ
मजबूर किया गया	और दिल उसका	मुत्मइन है	ईमान पर	और लेकिन	जो कोई	खोल दे

بِالْكُفْرِ	صَدْرًا	فَعَلَيْهِمْ	غَضَبٌ	مِّنَ اللّٰهِ ۚ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ
कुफ़्र के लिए	सीना	तो उन पर	ग़ज़ब है	अल्लाह की तरफ़ से	और उनके लिए है	अज़ाब

عَظِيْمٌ ﴿106﴾	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمُ	اسْتَحَبُّوا	الْحَيٰوةَ	الدُّنْيَا	عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ
बहुत बड़ा	ये	बवजह इसके कि वो	उन्होंने तरजीह दी	ज़िंदगी को	दुनिया की	आख़िरत पर

وَ اَنَّ	اللّٰهَ	لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿107﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	طَبَعَ
और बेशक	अल्लाह	नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो काफ़िर हैं	यही लोग हैं	वो जो	मोहर लगा दी

اللّٰهُ	عَلٰى	قُلُوْبِهِمْ	وَسَمْعِهِمْ	وَ اَبْصَارِهِمْ ۚ	وَ اُولٰٓئِكَ	هُمُ
अल्लाह ने	ऊपर	उनके दिलों के	और उनके कानों के	और उनकी आंखों के	और यही लोग हैं	वो

الْغٰفِلُوْنَ ﴿108﴾	لَا جَرَمَ	اَنَّهُمْ	فِى الْاٰخِرَةِ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿109﴾	ثُمَّ
जो ग़ाफ़िल हैं	नहीं कोई शक	यक़ीनन वो	आख़िरत में	वो ही	ख़सारा पाने वाले हैं	फिर

اِنَّ	رَبَّكَ	لِلَّذِيْنَ	هَاجَرُوْا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	فُتِنُوْا	ثُمَّ
बेशक	रब आपका	उनके लिए जिन्होंने	हिजरत की	बाद इसके	जो	वो आज़माइश में डाले गए	फिर

جٰهَدُوْا	وَصَبَرُوْٓا ۙ	اِنَّ	رَبَّكَ	مِنْۢ بَعْدِهَا	لَغَفُوْرٌ
उन्होंने जिहाद किया	और उन्होंने सब्र किया	बेशक	रब आपका	बाद इसके	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ ﴿110﴾ ع	يَوْمَ	تَاْتِىْ	كُلُّ	نَفْسٍ	تُجَادِلُ	عَنْ نَّفْسِهَا
निहायत रहम करने वाला है	जिस दिन	आएगा	हर	नफ़्स	वो झगड़ेगा	अपने नफ़्स के बारे में

ع 14 10 20

وَتُوَفّٰى	كُلُّ	نَفْسٍ	مَّا	عَمِلَتْ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿111﴾	وَضَرَبَ
और पूरा-पूरा दिया जाएगा	हर	नफ़्स को	जो	उसने अमल किया	और वो	ना वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	और बयान की

اللّٰهُ	مَثَلًا	قَرْيَةً	كَانَتْ	اٰمِنَةً	مُّطْمَئِنَّةً	يَّاْتِيْهَا	رِزْقُهَا
अल्लाह ने	मिसाल	एक बस्ती की	वो थी	अमन वाली	मुत्मइन	आता था उसके पास	रिज़्क़ उसका

رَغَدًا	مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ	فَكَفَرَتْ	بِاَنْعُمِ اللّٰهِ	فَاَذَاقَهَا	اللّٰهُ
बाफ़राग़त	हर जगह से	तो उसने नाशुक्री की	अल्लाह की नेअमतों की	तो चखाया उसे	अल्लाह ने

لِبَاسَ	الْجُوْعِ	وَالْخَوْفِ	بِمَا	كَانُوْا	يَصْنَعُوْنَ ﴿112﴾	وَ لَقَدْ	جَآءَهُمْ
लिबास	भूख का	और ख़ौफ़ का	बवजह उसके जो	थे वो	वो किया करते	और अलबत्ता तहक़ीक़	आया उनके पास

رَسُوْلٌ	مِّنْهُمْ	فَكَذَّبُوْهُ	فَاَخَذَهُمُ	الْعَذَابُ	وَهُمْ	ظٰلِمُوْنَ ﴿113﴾
एक रसूल	उनमें से	तो उन्होंने झुठला दिया उसे	तो पकड़ लिया उन्हें	अज़ाब ने	जबकि वो	ज़ालिम थे

فَكُلُوْا	مِمَّا	رَزَقَكُمُ	اللّٰهُ	حَلٰلًا	طَيِّبًا ۖ	وَّاشْكُرُوْا	نِعْمَتَ اللّٰهِ
पस खाओ	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया तुम्हें	अल्लाह ने	हलाल	पाक	और शुक्र करो	अल्लाह की नेअमत का

اِنْ	كُنْتُمْ	اِيَّاهُ	تَعْبُدُوْنَ ﴿114﴾	اِنَّمَا	حَرَّمَ	عَلَيْكُمُ	الْمَيْتَةَ
अगर	हो तुम	सिर्फ़ उसी की	तुम इबादत करते	बेशक	उसने हराम किया	तुम पर	मुर्दार

وَالدَّمَ	وَلَحْمَ	الْخِنْزِيْرِ	وَمَآ	اُهِلَّ	لِغَيْرِ	اللّٰهِ	بِهٖ ۚ	فَمَنِ
और ख़ून	और गोश्त	ख़िन्ज़ीर का	और जो	पुकारा जाए	वास्ते ग़ैर	अल्लाह के	उस पर	तो जो कोई

اضْطُرَّ	غَيْرَ	بَاغٍ	وَّلَا	عَادٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ
मजबूर किया गया	ना	रग़बत करने वाला हो	और ना	हद से गुज़रने वाला	तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ ﴿115﴾	وَلَا	تَقُوْلُوْا	لِمَا	تَصِفُ	اَلْسِنَتُكُمُ	الْكَذِبَ	هٰذَا
निहायत रहम करने वाला है	और ना	तुम कहो	वो जो	बयान करती हैं	ज़बानें तुम्हारी	झूठ	कि ये

حَلٰلٌ	وَّهٰذَا	حَرَامٌ	لِّتَفْتَرُوْا	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ ؕ	اِنَّ	الَّذِيْنَ
हलाल है	और ये	हराम है	ताकि तुम गढ़ सको	अल्लाह पर	झूठ	बेशक	वो लोग जो

يَفْتَرُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ	لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿116﴾ ؕ	مَتَاعٌ	قَلِيْلٌ ۖ	وَّلَهُمْ
गढ़ते हैं	अल्लाह पर	झूठ	नहीं वो फ़लाह पाऐंगे	फ़ायदा है	थोड़ा सा	और उनके लिए है

عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿117﴾	وَعَلَى	الَّذِيْنَ	هَادُوْا	حَرَّمْنَا	مَا	قَصَصْنَا
अज़ाब	दर्दनाक	और ऊपर	उन लोगों के जो	यहूदी बन गए	हराम कर दिया हमने	जो	बयान किया हमने

عَلَيْكَ	مِنْ قَبْلُ ۚ	وَمَا	ظَلَمْنٰهُمْ	وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
आप पर	इससे पहले	और नहीं	ज़ुल्म किया था हमने उन पर	और लेकिन	थे वो	अपनी ही जानों पर

يَظْلِمُونَ ﴿118﴾	ثُمَّ	إِنَّ	رَبَّكَ	لِلَّذِينَ	عَمِلُوا	السُّوٓءَ
वो ज़ुल्म करते	फिर	बेशक	रब आपका	उन लोगों के लिए जिन्होंने	अमल किए	बुरे

بِجَهَالَةٍ	ثُمَّ	تَابُوا	مِنْ بَعْدِ	ذٰلِكَ	وَأَصْلَحُوٓا لا	إِنَّ	رَبَّكَ
बवजह जहालत के	फिर	उन्होंने तौबा कर ली	बाद	उसके	और उन्होंने इस्लाह कर ली	बेशक	रब आपका

مِنْ بَعْدِهَا	لَغَفُورٌ	رَّحِيمٌ ﴿119﴾ ع	إِنَّ	إِبْرٰهِيمَ	كَانَ	أُمَّةً
बाद इसके	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	बेशक	इब्राहीम	था	एक उम्मत

ع 15 9 21

قَانِتًا	لِّلّٰهِ	حَنِيفًا ط	وَلَمْ	يَكُ	مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿120﴾ لا	شَاكِرًا
मुतीअ/फ़रमांबरदार	अल्लाह के लिए	यकसू	और ना	था वो	मुशरिकीन में से	शुक्रगुज़ार था

لِّأَنْعُمِهِ ط	اجْتَبٰهُ	وَهَدٰهُ	إِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيمٍ ﴿121﴾	وَآتَيْنٰهُ
उसकी नेअमतों पर	उसने चुन लिया उसे	और उसने हिदायत दी उसे	तरफ़ रास्ते	सीधे के	और दी हमने उसे

فِي الدُّنْيَا	حَسَنَةً ط	وَإِنَّهُ	فِي الْآخِرَةِ	لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿122﴾ ط	ثُمَّ
दुनिया में	भलाई	और बेशक वो	आख़िरत में	अलबत्ता सालेहीन में से है	फिर

أَوْحَيْنَآ	إِلَيْكَ	أَنِ	اتَّبِعْ	مِلَّةَ	إِبْرٰهِيمَ	حَنِيفًا ط	وَمَا
वही की हमने	तरफ़ आपके	कि	पैरवी कीजिए	तरीक़े की	इब्राहीम के	जो यकसू था	और ना

كَانَ	مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿123﴾	إِنَّمَا	جُعِلَ	السَّبْتُ	عَلَى الَّذِينَ
था वो	मुशरिकीन में से	बेशक	फ़र्ज़ किया गया	हफ़्ते का दिन	उन लोगों पर

اخْتَلَفُوا	فِيهِ ط	وَإِنَّ	رَبَّكَ	لَيَحْكُمُ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
जिन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	उसमें	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	दिन	क़यामत के

فِيمَا	كَانُوا	فِيهِ	يَخْتَلِفُونَ ﴿124﴾	ادْعُ	إِلٰى سَبِيلِ	رَبِّكَ
उसमें जो	थे वो	जिसमें	वो इख़्तिलाफ़ करते	दावत दीजिए	तरफ़ रास्ते के	अपने रब के

بِالْحِكْمَةِ	وَالْمَوْعِظَةِ	الْحَسَنَةِ	وَجَادِلْهُمْ	بِالَّتِيْ	هِيَ
साथ हिक्मत के	और नसीहत के	जो अच्छी हो	और बहस कीजिए उनसे	साथ उस तरीक़े के	वो जो

اَحْسَنُ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	اَعْلَمُ	بِمَنْ	ضَلَّ	عَنْ سَبِيْلِهٖ
बेहतरीन है	बेशक	रब आपका	वो	ख़ूब जानता है	उसे जो	भटक गया	उसके रास्ते से

وَهُوَ	اَعْلَمُ	بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿125﴾	وَاِنْ	عَاقَبْتُمْ	فَعَاقِبُوْا	بِمِثْلِ
और वो	ख़ूब जानता है	हिदायत याफ़्ता को	और अगर	बदला लो तुम	तो बदला लो	मानिंद

مَا	عُوْقِبْتُمْ	بِهٖ ؕ	وَلَئِنْ	صَبَرْتُمْ	لَهُوَ	خَيْرٌ	لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿126﴾
उसके जो	तकलीफ़ दिए गए तुम	साथ जिसके	और अलबत्ता अगर	सब्र करो तुम	अलबत्ता वो	बेहतर है	सब्र करने वालों के लिए

وَاصْبِرْ	وَمَا	صَبْرُكَ	اِلَّا	بِاللّٰهِ	وَلَا	تَحْزَنْ	عَلَيْهِمْ
और सब्र कीजिए	और नहीं	सब्र आपका	मगर	साथ अल्लाह (की तौफ़ीक़) के	और ना	आप ग़म कीजिए	उन पर

وَلَا	تَكُ	فِيْ ضَيْقٍ	مِّمَّا	يَمْكُرُوْنَ ﴿127﴾	اِنَّ	اللّٰهَ
और ना	आप हों	घुटन/तंगी में	उससे जो	वो चालें चल रहे हैं	बेशक	अल्लाह

مَعَ	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	وَّالَّذِيْنَ	هُمْ	مُّحْسِنُوْنَ ﴿128﴾ ع
साथ है	उनके जो	तक़वा करें	और वो लोग जो	वो	एहसान करने वाले हैं

ع 16 9 22